खसरा–रूबैला टीकाकरण अभियान – भ्रांतियां बनाम तथ्य

1. टीके की सुरक्षा एवं प्रभाव

भ्रांतियां

मीजिल्स–रूबैला (एम.आर.) टीके का विपरीत प्रभाव होता है, उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर असर पड़ता है और उनकी एकाग्रता पर भी असर पड़ता है

तथ्य

1. *मीजिल्स–रूबैला का टीका एक सुरक्षित और असरदार टीका है, जो लगभग 40 वर्षों से पूरे विश्व में इस्तेमाल हो रहा है।*
2. *एम आर टीके से सम्बंधित वितरीत प्रभाव ज्यादातर हल्के और छोटे अंतराल वाले होते हैं – हल्का बुखार, लाल चकत्ते, मांसपेशियों में दर्द, जो कि अपने आप ही ठीक हो जाता है।*
3. *किसी भी दूसरी सुई से दवा देने पर होने वाले हल्के दर्द के समान ही हल्का दर्द होता है और सुई लगने वाले स्थान पर लालिमा हो जाती है।*

भ्रांतियां

इन टीकों की सुरक्षा और प्रभाव की जांच नहीं हुई है।

तथ्य

1. *पूरे विश्व में लाखों बच्चों का टीकाकरण एम आर वैक्सीन से किया जा चुका है।*
2. *वर्तमान में इस्तेमाल हो रहे एमआर टीके की सुरक्षा एवं असर का बेहतरीन रिकॉर्ड है।*
3. *एमआर अभियान में दिए जाने वाले टीकों का निर्माण भारत में हो रहा है और यह सेंट्रल ड्रग्स स्टैण्डर्ड कंट्रोल आर्गेनाइजेशन (इंडिया) द्वारा लाइसेंस प्राप्त है। यही टीका भारत और बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल और म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों में भी दिया जा रहा है।*

2. विदेश में बने टीके

भ्रांतियां:

एमआर वैक्सीन भारत के बाहर बनायी जा रही है, उसे भारत के बच्चों पर टेस्ट किया जा रहा है।

तथ्य

एमआर अभियान के तहत दी जाने वाली एमआर वैक्सीन भारत में ही तैयार की जा रही है और यह सेंट्रल ड्रग्स स्टैण्डर्ड कंट्रोल आर्गेनाइजेशन (इंडिया) द्वारा लाइसेंस प्राप्त है।

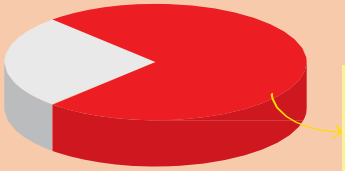

वैष्विक स्तर पर अधिकतर मीजल्स–रूबैला (एम आर) टीकों की सप्लाई भारत से ही की जाती है।

3. वंचित समुदाय

भ्रांतियां:

1. एमआर का टीका मुसलमानों की जनसंख्या को नियंत्रित करने की साजिश है।

2. यह टीका केवल मुसलमान समुदाय के लिए है, यह केन्द्र सरकार की एक साजिश है।

तथ्यः

1. *एमआर के टीके का प्रजनन क्षमता कम करने के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।*
2. *मीजल्स–रूबैला (एमआर) का टीका खसरा और रूबैला और इन बीमारियों से जुड़ी हुई समस्याओं जैसे विकलांगता और असमय मृत्यु से भी बचाव करता है।*
3. *एम आर अभियान खसरा उन्मूलन और रूबैला तथा जन्मजात रूबैला लक्षण को नियंत्रण करने के लिये पूरे देश में चलाया जा रहा है।*
4. *लोगों में रोग प्रतिरोधक क्षमता लगातार विकसित करने के लिए यह अभियान चल रहा है। इससे यह बीमारी नहीं फैलेगी। पूरे देश में प्रत्येक जाति, सभी धर्मो के 9 महीने से 15 वर्ष की उम्र के अन्दर के बालक और बालिकाओं को इस अभियान के तहत टीका लगाया जा रहा है।*

4. एमआर टीका लगाने की सही उम्र

भ्रांतियांः

टीकाकरण किशोरावस्था में होना चाहिए न कि जब वह शिशु या छोटा हो।

तथ्य

1. *खसरे का टीका लगाने का सही समय शैशवकाल ही है। इस वक्त बच्चे सबसे ज्यादा संवेदनशील होते हैं।*
2. डब्ल्यूएचओ के मुताबिक जिन देशों में खसरे के कारण बच्चों की मृत्यु का खतरा अधिक है वहां 9 महीने के बाद में एमआर 1 के टीके लगाने चाहिए।
3. पहली खुराक 9–12 महीने की उम्र के बच्चों को और दूसरी खुराक 16–24 महीने की उम्र के बच्चों को दी जाती है।
4. वर्तमान एमआर अभियान के तहत, 9 महीने से लेकर 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को सप्लीमेंट्री डोज के साथ टीकाकरण की ज़रूरत है फिर चाहे उन्हें पहले टीका लग ही क्यों न चुका हो।

(या तो अभियान के माध्यम से या नियमित टीकाकरण के द्वारा)

5. एमआर टीकाकरण से संबंधित

भ्रांतियांः

अभियान के दौरान इस्तेमाल होने वाली सुइयां सुरक्षित नहीं होतीं।

तथ्य

मीजल्स–रूबैला अभियान के दौरान इस्तेमाल होने वाली सिरिन्ज (सुइयां) स्टेराइल (जीवाणुरहित) पैकिंग में आती है और उनकी सुई इस्तेमाल के बाद खुद ब खुद टूट जाती है उनको दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है।

6. वो बच्चे जिनका पहले ही एमआर टीकाकरण हो चुका है

भ्रांतियांः

बालरोग विशेषज्ञ अभिभावकों को इस अभियान में बच्चों के टीकाकारण से रोकते हैं क्योंकि या तो बच्चे को पहले से ही यह टीका लग चुका है या उन्हें ऐसा लगता है की इससे बच्चे के स्वास्थ्य पर कोई विशेष असर नहीं पड़ेगा।

तथ्य

1. *वास्तव में जिन बच्चों को पहले भी खसरा के टीके उनके बालरोग विषेशज्ञ द्वारा या स्वास्थ्य केन्द्र पर लगाया जा चुका हैं, उन्हें भी एमआर टीके अभियान के दौरान लगाया जाना हैं।*
2. *ऐसा देखा गया है कि जिन बच्चों को पहले से टीके लग चुके थे उनको भी बीमारी हो गयी। इसलिए अभियान के दौरान अतिरिक्त खुराक देने से बच्चों का अतिरिक्त बचाव ही होता है। खसरा बचपन में होने वाली मृत्यु का एक बड़ा कारण है और रूबैला उम्र भर की जन्मजात विकलांगता के लिये जिम्मेदार होती है। दोनों ही बीमारियों का कोई इलाज़ नहीं है। इन बीमारियों से सिर्फ एमआर*

टीकाकरण के जरिए ही बचा जा सकता है। इसलिए बच्चों को नियमित टीकाकरण और अभियान के दौरान टीके अवश्य लगवाने चाहिए।

7. सरकारी स्कूल ही क्यों?

भ्रांतियां:

समुदाय के साधारण व्यक्तियों द्वारा अक्सर यह सवाल पूछा जाता है कि स्वास्थ्य सेवाओं के लिए सरकारी स्कूल ही क्यों चुने जाते हैं एमआर अभियान के लिए बड़े निजी स्कूल क्यों नहीं?

तथ्य

1. *एमआर अभियान सभी स्कूल में चलाया जाएगा फिर चाहे वो सरकारी हो या निजी स्कूल।*
2. *एमआर अभियान खसरा उन्मूलन और रूबैला तथा जन्मजात रूबैला लक्षण को नियंत्रण करने लिए पूरे देश में चलाया जा रहा है, बीमारियों की इस कड़ी को तोड़ने के लिए अतिसंवेदनशील सभी बच्चों का टीकाकारण आवश्यक है।*

भ्रांतियां:

यह एक सरकारी कार्यक्रम है, इसलिए सरकारी स्कूलों में लागू होता है, तो फिर निजी स्कूलों को ये टीके लगवाने के लिए क्यों कहा जाता है।

तथ्य

1. *एमआर अभियान खसरा उन्मूलन और रूबैला तथा जन्मजात रूबैला लक्षण को नियंत्रित करने के लिए पूरे देश में चलाया जा रहा है। इस बीमारी को रोकने के लिए सभी अतिसंवेदनशील बच्चों का टीकाकरण आवश्यक है। एमआर अभियान में देने वाली खुराक अतिरिक्त है नियमित खुराक के दिए जाने के बाद भी यह दी जा सकती है।*
2. *यह टीकाकरण सरकारी और निजी दोनों तरह के स्कूलों में चलाया जाता है। इस बीमारी के संक्रमण को रोकने और इसे जड़ से खत्म करने के लिए सभी 9 महीने की आयु से लेकर 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों (बालक–बालिका दोनों) के टीकाकरण की ज़रूरत है।*